Volume I, Issue XV
July to September 2016

2016-17

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 1.9411 (2015)

Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)

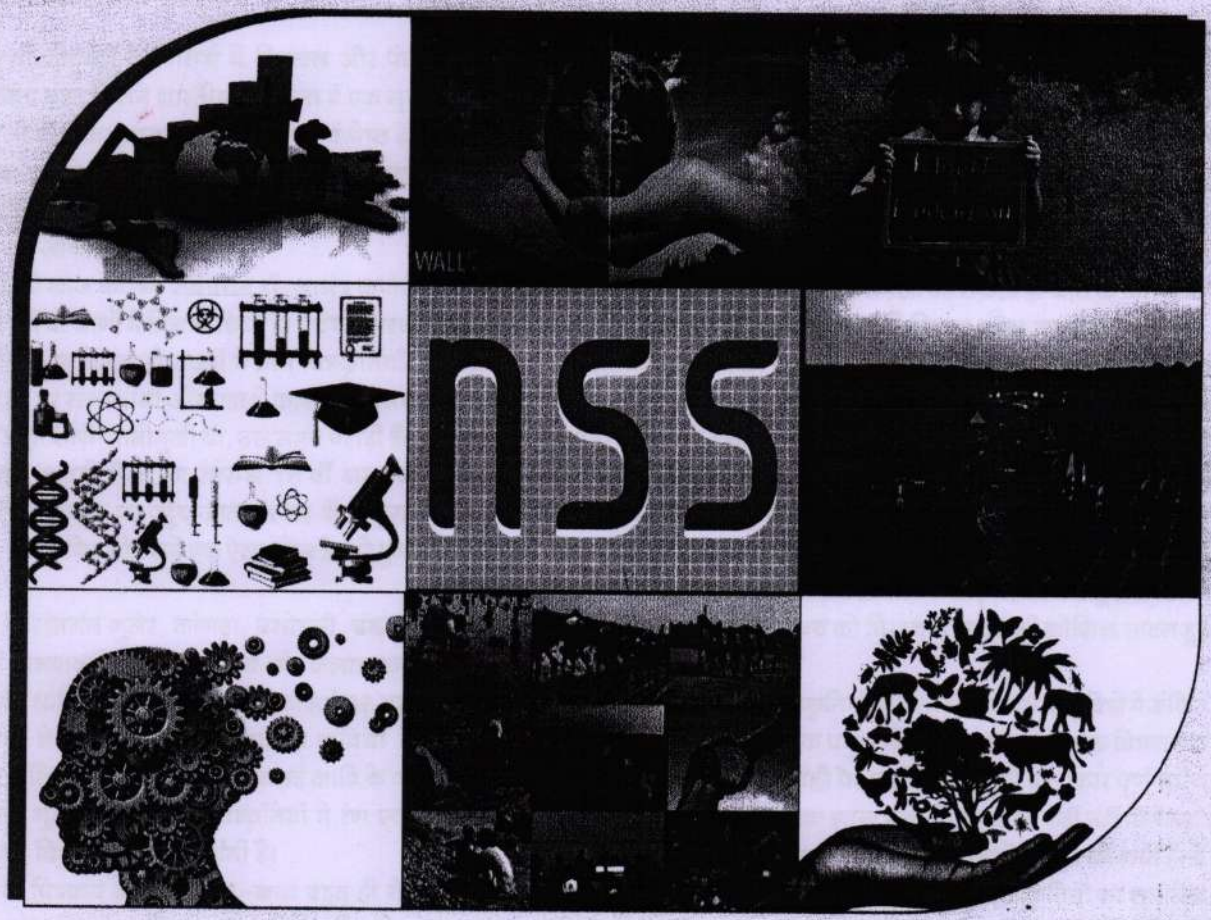

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102. **Email** : nssresearchjournal@gmail.com **Website** www.nssresearchjournal.com

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed Research Journal) July to September 2016, Vol. I
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 1.9411 (2015)

भारतीय चित्रकला में पहाड़ी शैली एक सुंदर अध्याय - (1700 ई. से 1900 ई. तक)

डॉ. यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना - 20 वीं शताब्दी के आरम्भ में हिमाचल और पंजाब में ऐसे बहुमूल्य चित्रों का पता चला जिसने भारतीय चित्रकला में एक सुंदर अध्याय जोड़ दिया। इस शैली में अंकित मानवाकृतियाँ उन्नत एवं श्रेष्ठ है।

'मैटकाफ सबसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने कांगड़ा में पहाड़ी चित्रों की खोज की थी। उसके बाद 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में श्री आनंद कुमार स्वामी ने इन चित्रों की आगे खोज की।'[1]

राजपूत शैली की खोज का श्रेय सर्वप्रथम डॉ. आनंद कुमार स्वामी को ही जाता है। उन्होंने इसे दो भागों में विभक्त किया है। प्रथम राजस्थान से प्राप्त चित्र कृतियाँ, दूसरी पंजाब के पहाड़ी राज्यों में प्राप्त चित्रकृतियाँ। नवीनतम मान्यताओं के आधार पर राजस्थानी और पहाड़ी कला में लगभग 200 वर्ष का अंतर है, जब राजपूत शैली पतनोमुखी थी, उस समय पहाड़ी शैली विकास की ओर अग्रसर थी। 'पहाड़ी शैली का आरम्भ 18 वीं शताब्दी से होकर पचास वर्ष में ही अपनी पूर्णता पर पहुँच जाता है। यह शैली मुगल शैली से बहुत प्रभावित रही, परन्तु फिर भी उसमें एक ऐसा ओज है, जो मुगल शैली के किसी चित्र में नहीं।'[2]

पहाड़ी शैली के अंतर्गत गुलेर, कांगड़ा, बसोहली, चंबा, कुल्लू आदि शामिल हैं। यहाँ की मानवाकृतियाँ अपूर्व सौंदर्य और कलात्मकता लिये हुए है। इन चित्रों में वैष्णव धर्म संबंधी विषय प्रमुख है। काव्यों पर आधारित चित्र इस शैली में प्रचुरता से प्राप्त होते हैं, रीतिकालीन कवियों में सूरदास, तुलसीदास, केशव, मतिराम, देव और बिहारी सतसई आदि के काव्य प्रमुख है। बसोहली, कांगड़ा गुलेर आदि की मानवाकृतियों में रंग एवं रेखाओं में भिन्नता इनकी अपनी विशेषताओं को दर्शाती है।

पहाड़ी शैली के चित्रकार के लिए कृष्ण-कथा बहुत ही रोचक विषय रहा। चित्रकार ने कृष्ण जीवन पर चित्रण कार्य किया। चित्र में कृष्ण रूपी मानवाकृति एवं पृष्ठभूमि में सुंदर पहाड़ी दृश्य, अटूट लावण्यता को प्रकट करता है। पौराणिक कथाओं एवं महाकाव्यों जैसे रामायण, महाभारत, भागवत्-पुराण, कृष्ण लीला, गीत-गोविंद आदि विषयों में सुंदर मानवाकृतियों का चित्रण हैं। विशेष रूप से नारी आकृति चित्रण इतने सुंदर रूप से किया गया है कि देखते ही बनता है। साथ ही नायक-नायिका तथा उनके व्यक्ति चित्र (शबीह), शिकार दृश्य, स्नानरत दृश्य और त्यौहार जैसे- होली, प्रेम कहानियाँ, मधु-मालती और नल-दम्यति आदि विषय बड़े ही भावनात्मक एवं सौंदर्यात्मक रूप में चित्रित हैं।[3]

पहाड़ी शैली में चित्रकार ने मानवाकृतियों में भावाभिव्यक्ति के उच्च स्तर को दिखाने में सफलता हासिल की है। यहाँ की नारी एवं पुरूषाकृतियों की वेशभूषा मुगल शैली से मिलती-जुलती है, लेनिक समय-समय पर इसमें बदलाव इसकी मौलिकता को बनाये रखता है।

कांगड़ा शैली-संसार प्रसिद्ध कांगड़ा शैली में सुंदर एवं भावपूर्ण मानवाकृतियाँ का जन्म 18 वीं शताब्दी के अंत में हुआ। इन मानवाकृतियों को अंकित करने वाले चित्रकार तो वही थे, जिन्होंने गुलरे के चित्रों की रचना की, इनमें कुछ मुगल चित्रकार थे, जो भागकर यहाँ शरण में आये थे। राजा संसार चंद (1775-1823 ई.) के संरक्षण में इन कलाकारों ने जिस ईमानदारी और सच्ची लगनशीलता का परिचय दिया, यहाँ की मानवाकृतियों में लक्षित भावाभिव्यक्ति को देखकर समझा जा सकता है। कार्य के प्रति सच्ची लगन कांगड़ा शैली की सुंदरता एवं प्रसिद्धि का प्रमुख कारण था।

'मानव संवेदना को महसूस करते हुए पहाड़ी चित्रकार ने चित्र में हर रूप को संयोजित कर अपनी उच्च स्तर की तर्कशक्ति एवं तकनीक का परिचय दिया है। कांगड़ा के कलाकार ने सुंदर काव्य रचना के माध्यम से मानवाकृतियों को विषय के अनुरूप अद्भुत रूप से संयोजित किया है, जो प्रशंसनीय है। साथ ही इन मानवाकृति को वातावरण के अनुकूल प्रदर्शित करने के लिए, पत्तियों एवं लताओं का सुंदर एवं सजीव अंकन किया गया है। इस शैली में पृष्ठ भूमि को गुलाबी, पीले, सफेद एवं मानव आकृति की वेशभूषा को रंग-बिरंगी रंगतों में चित्रण कर विषय को चिरस्थाई बनाने की कोशिश सफल हुई है।'[4]

'कांगड़ा शैली की मानवाकृतियाँ विश्वभर में सुंदरतम् लघुचित्रों में अंकित मानी जाती है। इस शैली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि व्यक्ति चित्रण बड़ा सजीव है, जो भी हाव-भाव चेहरे पर प्रदर्शित हैं, उनमें कलाकार पूर्ण रूपेण सफल हुआ है, आंतरिक भावों का इतना सुंदर चित्रण अन्य कहीं नहीं मिलता।'[5]

कांगड़ा शैली में नारी आकृतियाँ बहुताय मात्रा में चित्रित की गयी हैं। ये नारी आकृतियाँ बहुत प्रभावशाली एवं सजीव हैं। स्त्री आकृतियों का शारीरिक सौंदर्य कोमल व छरहरे बदन का है, इनकी आँखें धनुषाकार (भाव से परिपूर्ण) चेहरा गोल, अंगुलियाँ कोमल, लयदार तथा सुंदर बनाई गई हैं। यहाँ के चित्रकार ने इन नारी आकृतियों के चित्रण कार्य में भारतीय परम्परा का ध्यान बखूबी रखा है। इनके चेहरे तथा अंग-प्रत्यंग में भारतीयता की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। सुंदर वेश-भूषा, बालों की बनावट तथा सुंदर आभूषणों से सुसज्जित नारी का बड़ा मनमोहक चित्रण हुआ है। वस्त्र सज्जा के अंतर्गत स्त्रियों को लहंगा-चोली एवं पारदर्शी चुनरी में चित्रित किया गया है। वहीं पुरूषों को अंगरखा पजामा तथा पगड़ी बांधे दिखाया गया है। कहीं-कहीं मुगल प्रभाव भी झलकता है। कांगड़ा शैली के मुख्य नायक श्री कृष्ण को जहाँ कहीं चित्रित किया गया है, उन्हें पीले परिधान पहने दिखाया है।

कांगड़ा शैली के चित्रकारों ने नारी चित्रण के अंतर्गत 'नायिका भेद' को बड़ी कुशलता से अंकित किया है। नायिका-भेद में नायिकाओं को विभिन्न रूप एवं भाव में प्रदर्शित किया है। इसमें कलाकार ने नायिका के विभिन्न रूपों

* सहायक प्राध्यापक (चित्रकला) शासकीय महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत

(Drawing / चित्रकला)

79. भारतीय चित्रकला में पहाड़ी शैली एक सुंदर अध्याय – (1700 ई से 1900 ई. तक) (डॉ. यतीन्द्र महोबे) 211

80. रवीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रात्मक रूपसंपदा में अनुठा रंगाच्छादन (शालिनी रानी) 214

81. अमृता शेरगिल के आंतरिक मन की उदासी एवं संवेदना में डूबे चित्र–फलक (करूणा) 218

82. लालचन्द मारोठिया का प्रकृति संसार (प्रो. किरन सरना, पारूल बापलावत) 221

83. प्रकृति के वातायन में सौंदर्य का राग रचते जगमोहन माथोड़िया (प्रो. किरन सरना, प्रिया बापलावत) 224

(Education / शिक्षा)

84. The Effectivness Of The Jigsaw Methods Of Co-Operative Learning Versus Conventional Method Of Learning (Dr. Manorama Mathur, Khushboo Mathur) 227

85. शिक्षा अधिकार अधिनियम – समस्याऐं एवं परिवर्तन (नीलिमा पहारे) 230

86. माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र., भोपाल से मान्यता प्राप्त विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन (डॉ. आर. के. अरोरा, अंजना पाटनवाला) 233

87. विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास (बालेन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. एम. के. तिवारी) 235

88. योग्य शिक्षकों के निर्माण में सम सामयिक चुनौतियाँ (डॉ. उदय कालभंवर) 237

89. मूल्यपरक शिक्षा (डॉ. रश्मि पण्ड्या) 239

(Law/ विधि)

90. Environmental Torts : A Step Towardsthe Legal Revamping Policy Related To Environmental Protection (Aprajita Bhargava) 241

(Naveen Shodh Sansar / नवीन शोध संसार)

91. Membership Cum Author's Bio-Data Form 244

****